२४ जून, २०१९ के सद्‌गुण पर व्याख्या

सदाशयता

गरिमा बोरवणकर द्वारा लिखित

श्रीगुरुमाई ने २४ जून, २०१९ के लिए जो सद्‌गुण प्रदान किया है वह है, 'सदाशयता'। जिह्वा पर आते ही शहद घोल देने वाले, हिन्दी भाषा के इस सुन्दर शब्द में निहित हैं, अनेक सूक्ष्म और गूढ़-से लगने वाले अर्थ। हमें तह-दर-तह उनका मनन करने की ज़रूरत है।

जब गुरुमाई जी ने पहले-पहल मुझे बताया कि वे २४ जून को अपने जन्मदिन के उपलक्ष्य में सभी को जो सद्‌गुण देने वाली हैं, वह है, 'सदाशयता' तो उन्होंने मुझसे पूछा, "'सदाशयता' शब्द सुनकर इस शब्द के कितने अर्थ तुरन्त ही तुम्हारे दिमाग़ में आते हैं?" जब मैंने पहली बार यह शब्द सुना तो मेरा हृदय द्रवित हो उठा। इसके पहले कि मैं इस शब्द के विभिन्न अर्थ बता सकूँ, मुझे अन्तर में इस शब्द की अनुभूति हुई। फिर मैंने गुरुमाई जी को 'सदाशयता' में निहित कुछ गुण बताए जो उस वक़्त मेरे दिमाग़ में आए।

गुरुमाई जी ने कहा, "बहुत अच्छा। तुम सदाशयता पर व्याख्या लिखोगी जिससे कि लोग इस सद्‌गुण का अन्वेषण व अध्ययन करना आरम्भ कर सकें, और उन्हें जो समझ मिले, उससे उन्हें लाभ होने लगे।"

हमारे अनुसन्धान का पहला क़दम होगा, सदाशयता शब्द की व्युत्पत्ति पर नज़र डालना। हिन्दी में इसका धातु शब्द है 'सदाशय', जो दो शब्दों से मिलकर बना है : 'सत्' और 'आशय'। 'सत्' का अर्थ है, सत्य और 'आशय' का अर्थ है, अभिप्राय या उद्देश्य। अतः सदाशय एक ऐसे उद्देश्य को प्रकट करता है जो सत्य है और हितकारी है।

'सदाशयता' में निहित सूक्ष्मताएँ इसके अर्थ को ऐसी गहराई देती हैं कि वास्तव में इसका भाषान्तर नहीं किया जा सकता। अंग्रेज़ी का या अन्य किसी भी भाषा का कोई भी एक शब्द इस सद्‌गुण के सम्पूर्ण अर्थ को बताने के लिए पर्याप्त नहीं होगा। सदाशयता, सज्जनता या साधुता का आवाहन करती है। यह उदारता, दरियादिली और निःस्वार्थता के गुणों से ओतप्रोत है। यह सद्‌भावना, मृदुलता और दयालुता से महकती है। यह प्रेम और करुणा से सिक्त है। सदाशयता उन विचारों और कर्मों में पाई जाती है जो सभी के कल्याण के लिए होते हैं।

सदाशयता जिन गुणों को धारण किए हुए है, उनमें से कुछ गुणों को हम ध्यानपूर्वक देखेंगे।

उदाहरण के लिए, सज्जनता या साधुता एक सम्माननीय और परिष्कृत मन के लक्षण के रूप में परिभाषित की जाती है। सज्जन या साधुस्वभाव वाले व्यक्ति उच्च आदर्शों के अनुरूप आचरण करते हैं। वे ऐसे कर्म करते हैं जो दूसरों के लिए कल्याणकारी होते हैं।

उदारता वह गुण है जिसे प्रायः निश्छलता और दयालुता से जुड़ा हुआ माना जाता है। उदारता ही वह भाव है जो एक व्यक्ति को, बदले में कुछ पाने की अपेक्षा के बिना, देने के लिए प्रेरित करता है। उदारता व्यक्त करने के अनेक तरीक़े हैं—उदाहरण के लिए, किसी व्यक्ति, किसी संस्था आदि को भौतिक वस्तुएँ देकर, अपना समय देकर, अपना हुनर देकर। तथापि इस तरह से देने को 'उदारता' के रूप में विशिष्ट पहचान तब मिलती है जब ये कर्म केवल भलाई करने के उद्देश्य से किए जाते हैं, न कि व्यक्तिगत प्राप्ति के लिए।

एक अन्य गुण जो सदाशयता के अर्थ को और भी बढ़ा देता है, वह है, दरियादिली। दरियादिली के लिए अंग्रेज़ी शब्द है 'मैग्नॅनिमिटी' और यह लैटिन शब्द 'मैग्नस' से आता है, जिसका अर्थ है 'महान'। अतः 'मैग्नॅनिमिटी' यानी दरियादिली, विशाल-हृदयता, मृदुलता और करुणा की द्योतक है। दरियादिल होने का अर्थ है, परिस्थितियाँ चाहे जो भी हों, हरेक व्यक्ति के प्रति विनीत और दयालु होना, चाहे टकराव हो या सामंजस्य, चाहे जीत हो या हार।

सदाशयता निःस्वार्थता के गुण से रँगी हुई है। हो सकता है कि हम प्रायः सोचते हों कि निःस्वार्थता, स्वार्थ का न होना है; हम सोचते हों कि यह न तो स्वयं अपने ही बारे में सोचने के सम्बन्ध में है और न ही यह बस अपनी ही परवाह करने से सम्बन्धित है। पर सदाशयता में जिस निःस्वार्थता का संकेत है, वह इस अर्थ के परे है। इसका सम्बन्ध अपनी इच्छाओं की पूर्ति की परवाह करने से *ज़्यादा,* दूसरों की और इस संसार की ज़रूरतों की परवाह करने से है। यह किसी व्यक्तिगत यश, नाम, पद या धन की लालसा की भावना के बिना कार्य करना है। जब आप इस अर्थ में निःस्वार्थ होते हैं तो आप केवल दूसरों को आराम देने की और दूसरों के हित की इच्छा से प्रेरित होते हैं।

प्रकृति सदाशयता का परिधान धारण किए हुए है—बहती हुई नदियाँ जल प्रदान करती हैं, वह जल जो जीवन के लिए अपरिहार्य है; भरे-पूरे पेड़ जो सूरज की गर्मी से बचने के लिए शीतल छाया प्रदान करते हैं और मुक्त-भाव से अपने फल-फूल सभी को देते हैं; हवा जो सभी प्राणियों को श्वास लेने में सक्षम बनाती है। यह प्रकृति की सदाशयता ही है जो इस वैभवशाली व बहुमूल्य पृथ्वी ग्रह पर जीवन बनाए रखती है। प्रकृति भगवान की सदाशयता का प्रतिबिम्ब है।

कश्मीर प्रान्त में, चौदहवीं शताब्दी की सन्त-कवयित्री लल्लेश्वरी भगवान शिव की महान भक्त थीं। अपने गूढ़ काव्य में वे ऐसी सुन्दर छवियाँ प्रस्तुत करती हैं जो हमें स्मरण कराती हैं कि भगवान शिव सबमें विद्यमान हैं। सन्त लल्लेश्वरी के दो विशिष्ट पद मुझे बहुत प्रिय हैं :

'ॐ नमः शिवाय' से स्पन्दित होते हुए,

पौधे मिट्टी से उगते हैं।

'ॐ नमः शिवाय' बुदबुदाते हुए,

साधुजन पावन नदियों में स्नान करते हैं।

'ॐ नमः शिवाय' गुनगुनाते हुए

माताएँ अपने शिशुओं को दूध पिलाती हैं।

सब कुछ

शिव का नाम गा रहा है।

* * *

सूर्य की किरणें

कोई भेदभाव नहीं करतीं।

वे सभी घरों में समानरूप से प्रवेश करती हैं।

मेघ बिना किसी पक्षपात के

सभी पर वर्षा करते हैं।

वह परम तत्त्व

निष्पक्ष होकर

हर स्थान में अपनी पूर्णता में विद्यमान है।[१]

जब भगवान का प्रकाश आपके हृदय में जगमगा रहा होता है तो आप अपने चारों ओर की हर चीज़ में उनकी उपस्थिति को देखते हैं। आप समस्त संसार को भगवान की सृष्टि के रूप में देखते हैं। और जब आप इस बोध के साथ जीते हैं तो आपका प्रेम बड़े स्वाभाविक रूप से समस्त सृष्टि को अपने में समेट लेने के लिए मुक्त रूप से बहता है। आप चाहते हैं कि इस संसार में हर चीज़ पनपे, फले-फूले। फिर आपका मन एक उच्चतर उद्देश्य से जुड़ जाता है। यह है 'सदाशयता'।

यह समझें कि इस सद्गुण के अभ्यास में सहजता है। सदाशयता के सद्गुण को प्रकट करने के लिए आपको किसी भी तरह का ज़ोर लगाने की ज़रूरत नहीं है। इसके स्थान पर, आप अपने बोध को परिष्कृत करते हैं और उसे इस ज्ञान के साथ एकलय करते हैं कि केवल आप ही नहीं, बल्कि इस संसार में मौजूद हर चीज़ भगवान के प्रेम से, भगवान के दर्शन से पूरित है। यह बोध इस बात में आपकी मदद करता है कि आप अपने आपसे बाहर निकलकर इस ब्रह्माण्ड के साथ जुड़ें। सदाशयता, आचरण करने का एक तरीक़ा है—स्वयं अपने साथ, दूसरों के साथ और इस संसार के साथ।

अभिकथन

मैं सदाशयता के साथ आगे बढ़ता हूँ।

[अभिकथन — वे कथन जिन्हें जागरूकता के साथ बार-बार दोहराया जाता है ताकि वे हमारी चेतना में पैठ जाएँ।]

---

[१] *Lalleshwari,* हिन्दी भावार्थ, स्वामी मुक्तानन्द द्वारा तथा अंग्रेज़ी भाषान्तर, स्वामी कृपानन्द के साथ गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा [साउथ फ़ॉल्सबर्ग, न्यूयॉर्क : एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन, १९८१; ©गुरुदेव सिद्धपीठ, गणेशपुरी, भारत] पद २०, पृष्ठ १०; और पद ४३, पृष्ठ २२।

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।